

टिळक महाराष्ट्र विद्यापीठ, पुणे

संस्कृत विशारद (बी.ए.) बहिःस्थ

परीक्षा: जानेवारी - २०२३

सत्र ५ वे

विषय: जातकमाला (19E452)

दिनांक: ०४/ ०१/२०२३

गुण : ८०

वेळ : स. १०.०० ते १.००

| | | | | |
|---|--------------------------------|-----------------------------|---------------|-------------|
| सूचना: १) उजवीकडील अंक त्या प्रश्नांचे गुण दर्शवितात. २) सर्व प्रश्न सोडवणे अनिवार्य. | | | | |
| प्र.१. माध्यमभाषया अनुवदत (केचित् त्रयः) | | | | (१८) |
| १. बोधिसत्त्वः किलायं भगवान्भूतः प्रतिज्ञातिशयसदुशैर्दानप्रियवचनार्थचर्याप्रभृतिभिः प्रज्ञापरिग्रहनिरवद्यैः कारुण्यनिस्सन्दैर्लोक- मनुगृह्णन् स्वधर्माभिरत्युपनतशुचिवृत्तिन्युदितोदिते महति ब्राह्मणकुले जन्मपरिग्रहं चकार। स कृत संस्कारक्रमोजातककर्मादि- भिरभिवर्धमानः प्रकृतिमेधावित्वात्सानायय्यविशेषाज्ज्ञानकौतूहलाद कौसीद्याच्च नचिरेणैवाष्टादशसु विद्यास्थानेषुस्वकुलक्रमा- विरुद्धासु च सकलासु कलास्वाचार्यकं पदमवाप। | | | | |
| २. गुणास्तस्याधिकं रेजुदैवसम्पद्भिर्भूषणाः। किरणा इव चन्द्रस्य शरदुन्मीलितश्रियः।। तत्याज दृप्तानपि तस्य शत्रून् रक्तेव रेमे तदपाश्रितेषु। इत्यास तस्यान्यराधिपेषु कोपप्रसादानुविधायिनी श्रीः।। | | | | |
| ३. अथ तस्य राज्ञः पर्षदि निषण्णस्यामात्यगणपरिवृतस्य समुचितायां कृतायामर्थिजनस्य कः किमिच्छतीत्याहवानावधोषणायाम् उद्गोष्ठ्यामानेषु कोशाध्यक्षाधिस्थितेषु मणिकनकरजतधननिचयेषु विश्लेष्यमाणसुपुटासु विविधवसन परिपूर्णगर्भासुसमुपावर्त्य- मानेषु प्रवृत्तसम्पातेऽर्थिजने शक्रो देवानभिन्द्रो वृद्धमन्ध ब्राह्मणरूपमभिनिर्माय राज्ञश्चक्षुःपथे प्रादुरभवत्। अथ तस्य राज्ञः कारुण्यमैत्री परिभावितया धीरप्रसन्नसौम्यया प्रत्युद्गत इव परिष्वक्त इव च दृष्ट्या केनार्थं इत्युपनिमन्त्र्यमाणः क्षितिपानुचरैर्नृपति- समीपमुपेत्य जयाशीर्वचनपुरः सरं राजानमित्यवाच।। | | | | |
| ४. तच्छीघ्रमन्विष्यतां तावत्कुताश्चिदस्याः क्षुद्दुःखप्रीतकारहेतुविन्न तनयानात्मानं चोपहन्ति। अहमपि चैनंप्रयतिष्येसाहसादस्मा- न्निवारयितुम्। स तथैत्यस्मैप्रतिश्रुत्य प्रकान्तस्तदाहरान्वेषणपरो बभूव। अथ बोधिसत्त्वस्तं शिष्यंसव्यपदेशमतिबाह्यचिन्तासापेदे- संविद्यमाने सकले शरीरे कस्मात्परस्मान्मृगयामिमांसम्। यादृच्छिकी तस्य हि लाभसम्पत्कार्यात्ययः स्याच्च तथा ममाम्यम्।। | | | | |
| प्र.२. त्रयाणां ससन्दर्भं स्पष्टीकरणं कुरुत | | | | (१५) |
| १. परस्परद्रोहनिवृत्तभावास्तपस्विद्व्यालमृगविचेरुः। | | | | |
| २. संहर्षणं त्यागविशारदानामाकर्षणं सज्जनमानसानाम्। | | | | |
| ३. तमर्थिनः प्रीतमुखाः समीयुर्महाहदं वन्यगजा यथैव। | | | | |
| ४. धनमेव यतो देहि देवा मा साहसं कृथाः। | | | | |
| ५. तस्याङ्कुरोदय इवैष यदन्यराजचूडाप्रभाश्ररणेषु मे निषक्ताः। | | | | |
| प्र.३. विवरणं कुरुत। | | | | (१२) |
| १. बोधिसत्त्वस्य अजिताय उपदेशः अथवा शिबिजातके अमात्यविचारः। | | | | |
| प्र.४. टिप्पणीद्वयं लिखत। | | | | (१२) |
| १. व्याघ्रीजातके बुद्धस्य करुणा। | २. जातकमालायाः परिचयः। | ३. जातकमालायाः मङ्गलाचरणम्। | | |
| प्र.५. पञ्चानां रूपपरिचयं कारयत। | | | | (०५) |
| १. इयुः | २. अर्चयिष्ये | ३. बभूव | ४. प्रीतमुखाः | ५. नूलोकम् |
| ६. गात्रेषु | ७. चक्षुः | ८. गम्येत | ९. विदित्वा | १०. याचितुं |
| प्र.६. सन्धिविग्रहं कुरुत। (केवलं त्रयाणाम्) | | | | (०३) |
| १. त्वन्नाथतामुपगतास्मि | २. इत्युक्तवानसि | ३. सन्मित्रमात्यन्तिकम् | | |
| ४. श्रीमत्सज्जनत्वावदानम् | ५. यदहमुद्धृतभक्तमेकम् | | | |
| प्र.७. समानार्थान् लिखत (केवलं पञ्च) | | | | (०५) |
| १. पिता, २. व्याघ्रः, ३. स्वसुतः, ४. वसुन्धरा, ५. शक्रः, ६. ब्राह्मण, ७. कनकम्, ८. लक्ष्मी | | | | |
| प्र.८. सूचनानुसारं पञ्च रूपाणि लिखत। | | | | (०५) |
| १. प्रजा-प्रथमा बहुवचन। | २. दह - हेत्वर्थक। | | | |
| ३. सं+भू- वर्तमानकाल परस्मैपद तृतीय पुरुष एकवचन। | ४. द्विज- तृतीया बहुवचन। | | | |
| ५. दृश्- आज्ञार्थं द्वितीय पुरुष एकवचन। | ६. वि+रम्- पूर्वकालवाचक अव्यय। | | | |
| ७. अजित-तृतीया एकवचन। | | | | |
| प्र.९. विरुद्धार्थान् लिखत। (केवलं पञ्च) | | | | (०५) |
| १. मृदु, २. अनुकूल, ३. विरक्त, ४. गुण, ५. धर्म, ६. साधु, ७. श्लाघ्य. | | | | |